JSC-6-HI

मसीह के न्याय आसन के सामने आपको क्या प्रतिफल और न्याय मिल सकता है - प्रोग्राम 6

अनाऊंसर: वचन में विश्वासियों से कहा गया है, कि हम सबको मसीह के न्याय सिंहासन के सामने जाना होगा, लेकीन इस न्याय का उद्देश्य क्या है? क्या यीशु ने हमारे पापों के लिए पूरा दाम नही चुकाया और परमेश्वर उन्हें फिर स्मरण नही करता?

यदि ऐसा है तो फिर विश्वासियों का न्याय मसीह के द्वारा क्यों होगा? इस न्याय का उद्धार से कोई संबन्ध नही है/ उद्धार तो पूरी तरह से परमेश्वर का मुफ्त का वरदान है, जिस पल कोई मसीह में विश्वास करता है वो इसे उसी पल पाता है/

लेकिन मसीह के न्यायआसन का संबन्ध इससे है कि उसने हमें उद्धार देने के बादहम मसीह के लिए कैसे जीए, मसीह के लिए हम ने जो भी किया उसका मुल्यांकन कर प्रतिफल दिया जाएगा/

बाइबल कहती है कि हम सबको मसीह के न्याय आसन के सामने प्रकट होना होगा, कि हरकोई जिसे जो मिलना चाहिए वो पा सके, जो उन्होंने शरीर में किया था, चाहे भला या बुरा हो/

हम समझ सकते हैं कि हम ने जो उसके लिए भला किया है उसका प्रतिफल हम पाएगे, लेकिन इसका क्या अर्थ है जब बाइबल कहती है कि हम ने जो बुरा किया है उसका भी हम प्रतिफल पाएगे? क्या अविश्वासयोग्य विश्वासी विश्वासयोग्य विश्वासी जैसे प्रतिफल नही पाएगे?

लेकिन क्या मसीह के न्याय आसन के सामने आँसू होंगे? क्या प्रतिफल, आदर और सौभाग्य खो दिए जाएंगे, जो स्वर्ग में पुरे अनंतकाल तक हमारे स्थर को निश्चित करेगा?

बाइबल से इन सवालों का जवाब देने में मदत करने के लिए, आज मेरे मेहमान हैं डॉ/ अरविन लुथजर हैं, मुड़ी चर्च के सीनियर पास्टर, शिकागो, इलेनॉय से, हम इस बात को देखेंगे कि जब यीशु मसीह के न्याय आसन के सामने आपके जीवन का मुल्यांकन करेगा तो क्या पाएगा/

*****

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: स्वागत हैं, मैं जानता हूं कि यदि आप विश्वासी हैं तो आप सोच रहे होंगे कि इस जीवन के अंत में, हम इस संसार से चले जाएगे, बेहतर जगह पर, स्वर्ग में, वहां पाप नही होगा, बुराई नही, मृत्य नही, बीमारी नही, या मरना नही, ठीक है? बाइबल ये भी कहती है कि हम सब मसीह के न्याय आसन के सामने खड़े होंगे, कि हरएक व्यक्ति अपने अपने भले या बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हो पाए/ जी, इस वचन को पढने पर सवाल उठता है, परमेश्वर आपके मसीह जीवन में बहुत बुराई देखता है, याने आप मसीह के लिए विश्वासयोग्य रूप में नही जीए, खुद के लिए स्वार्थ में जीए, जब मसीह आपके जीवन का मुल्यांकन करता है, वो जैसे देखता वैसे आप देखते हैं, तो क्या स्वर्ग में कोई आंसू या दू:ख होगा? मैंने ये महत्वपूर्ण सवाल डॉ. अरविन लुथजर से पूछा, ये मुड़ी चर्च के सीनियर पास्टर हैं, शिकागो इलेनॉय में, मैं सोचता हूं कि ये जो कह रहे हैं, वो दिलचस्प है, सुनिए/

डॉक्टर अरविन लुथजर: खैर जानते हैं, जब स्वर्ग में आंसुओं की बात आती है, तो लगता है कि सच में केस नही हो सकती, लेकिन ये प्रकाशितवाक्य 21 में हैं, ये कहता है कि परमेश्वर उनकी आँखों से आरे आंसू पोछ देगा, जब तक वो वहां न हो उसे पोछने की जरूरत नही होंगी/ तो सवाल है कि क्यों?

कुछ लोग सोचे कि नरक में उनके प्रियजन हैं, ये इसका भाग हो सकता है लेकिन मैं सोचता हूं कि हम सब कुछ परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखेंगे, और यदि परमेश्वर सदा के लिए खुश होगा, तो हम सदा के लिए खुश होगे, मैं सोचता हूं कि आंसू तो खेद के आंसू होंगे, जब हम इन सारी बातों के बारे में सोचते हैं, जो यीशु ने हमें दी हैं, जिसने अपना लहू बहाया और हमें खरीद लिया है/ और फिर भी हम सोचेंगे कि हम तो अपने रास्ते गए थे, जब हम सोचते हैं कि हमने क्या खो दिया, तो शायद हम मृत्यु के बाद उस जगह पर रो सकते हैं, अवश्य ही सदा के लिए नही रोते रहेंगे, क्योंकि हमारे आंसू पोछ दिए जाएगे, और यदि मसीह के न्याय आसन के समाने बहुत अच्छा भी नही कर पाए, सच्चाई तो ये है कि परमेश्वर निश्चित करेगा कि सब लोग खुश हो जाए, सब प्रभू की सेवा करेंगे, लेकिन सब के पास एक ही स्थर के सौभाग्य और जिम्मेदारी नही होंगी/

जानते हैं जॉन, एक सवाल पूछा जाता है, वो सवाल है कि स्वर्ग में जो हम से उपर हैं, क्या हम उनसे जलन रखेंगे? मुझे जोनाथन एडवर्ड का जवाब पसंद हैं, उन्होंने कहा, नही, बिलकुल नही, हम जलन से इतने आज़ाद होंगे, हम दूसरों की सफलता में आनन्दित होंगे जैसे कि मानो वो सफलता तो हमारी खुद की हो/ याने जब आप

स्वर्ग में जाएगे, तो ये दो तरह के लोग नही होगे, विश्वासयोग्य और विश्वासयोग्य नही, हम में से ज्यादातर लोग बीच में कही होंगे, लेकिन हम यहाँ जिस तरह से जीते हैं, और यहाँ हम जिस तरह के व्यक्ति हैं, किसी तरह से ये प्रभाव डालता है, कि हम वो व्यक्ति हो जाए और वो सौभाग्य पाए जो पुरे अनंतकाल में मिलेगे/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब इफिसियों 2:10 को देखिए, क्योंकि हमें उसने बनाया है, और मसीह यीशु में भले कामों के लिए सृजे गए हैं, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया/ याने परमेश्वर पहले से तैयार किए, मौके और भले काम जो वो चाहता है कि हम करते जाए, यदि हम उसे नही करें, मैं डॉ. लुथजर से कहा कि इस वचन पर बताए, मसीह के न्याय आसन के सामने हमारे खड़े होने पर, सुनिए/

डॉक्टर अरविन लुथजर: खैर जॉन सबसे पहले मैं वचन के उस भाग के बारे में सोचता हूं, जो ये बात याद दिलाते हैं कि हमारे काम परमेश्वर के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, उसने इसे समय के पहले तैयार किए हैं, जानते हैं ग्रीक शब्द हैं पोय्मे, जिससे पोयम शब्द आता है, हम परमेश्वर की कविता है, ये स्वग में कविता है और हम पृथ्वी पर वैसे जीते हैं/

दूसरी बात तो बस यही है, इसलिए विश्वासयोग्यता उसके लिए और हमारे लिए महत्वपूर्ण है, खासकर जिस उद्देश्य के लिए बनाए गए हैं, उसे पूरा करते जाए, याद रखिए हमने पहले के प्रोग्राम ये कहा है, परमेश्वर का उद्देश्य यही है कि हम अपने सृष्टिकर्ता के जैसे जितनी हो सके वैसे होने की कोशिश करते जाए, और परमेश्वर ने हमारे लिए जो काम निश्चित किए उसमे चलने के लिए, हमने सोचने की जरूरत नही कि क्या यहाँ सटीकता से कहा है या नही, मैं सोचता हूं, मैं सोचता हूं कि ये धार्मिकता के काम हैं, जो करते हैं नर्स, और डॉक्टर और वकील और फैक्ट्री में काम करनेवाले, गृहणी और हम सब, ये सब धार्मिकता के काम हैं, ये तो सच में हमारे जीवन में में मसीह के कामों का फल है, और हमें उन भलें कामों में चलना चाहिए, और हमें उसका प्रतिफल मिलेगा/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब इन प्रोग्राम की सिरीज़ में, हमने इ स पर चर्चा की है कि क्या विश्वासी योग्य हैं कि यीशु मसीह के साथ राज्य करें, इसका क्या अर्थ है जब बाइबल कहती है कि विश्वासी योग्य हो, हम मसीह के साथ राज्य करने के योग्य कैसे हो सकते हैं? और महान प्रतिफल पाए, डॉ. लुथजर बताते हैं/

डॉक्टर अरविन लुथजर: सबसे पहले मैं सोचता हूं कि ये दिखाए कि ये सवाल कितना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यीशु ने खुद योग्यता के इस मुद्दे को उठाया है, उसके वचन सुनिए, जो मुझे बढकर अपने माता पिता से प्रेम करता है, वो मेरे योग्य नही है, जो मुझे ज्यादा अपने बेटे या बेटी से प्रेम रखता है वो मेरे योग्य नही है, और जो अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे नही चलता वो मेरे योग्य नही है, पौलुस इफिसियों की पत्री में कहता कि हमें अपनी बुलाहट के योग्य चाल चलना /

अब इसका क्या अर्थ है? इसका सरल अर्थ है कि हम यीशु मसीह को सही तरह से दर्शाए, और हम उसके पप्रतिनिधि हैं और उसने हमें उस संसार में रखा है, और जो लोग हमें देखते हैं वो यीशु को देखनेवाले हो, कुछ भी हो ये सबसे महत्वपूर्ण है, तो ये योग्य होना है, और अवश्य ही ये उन्नति का जीवन है, समर्पण का जीवन है, विश्वास का जीवन है, अनुशासन का जीवन है, और सारी बातें जो विश्वासी के नाते हम जानते हैं, ये सब उस शब्द में जुड़े हैं, योग्यता से चलना, और यदि ऐसा है तो अवश्य ही हम इस प्रोग्राम की सीरीज में जोर दे रहे हैं, कि हमें प्रतिफल मिलेगा/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब क्या वो प्रतिफल जो हम मसीह के न्याय आसन में पाएंगे, ये मसीह के लिए किए गए एक एक कामों के लिए होंगे, याने इतना समय काम करें तो इतना प्रतिफल मिलेगा? तो जवाब है नही, ये इस तरह काम नही करता, परमेश्वर वादा करता है कि हम जिसके लायक हैं उससे भी बहुत बढकर पाएगें/ सुनिए/

डॉक्टर अरविन लुथजर: फिर से जॉन हमें इस सच्चाई पर जोर देना है कि प्रतिफल दाम नही हैं, जैसे ये शब्द दीखता है, याने हफ्ते भर काम किए तो काम के लिए चेक मिलता है, ये इस तरह काम नही करता है, यीशु मसीह ने सबसे पहले, हमें जैसे प्रतिफल देना चाहिए उससे बढकर देता है, हम किसी तरह से नही कह सकते हैं कि हमने ये प्रतिफल कमाए हैं, याने सबसे पहले हमें इस बात पर जोर देना चाहिए/

दूसरी बात, हाँ, यदि कोई विश्वासयोग्य हैं और कई साल से परमेश्वर की सेवा की हैं, शायद वो बड़ा प्रतिफल पाए उससे जो राज्य में देरी से आता है, लेकिन जैसे हमने दृष्टांत में पहले चर्चा की है, देरी से आनेवालों को कल्पना से ज्यादा आशीष मिली है, याद है जिन्होंने सुबह से काम किया उन्होंने सोचा कि उन्हें ज्यादा मिलना

चाहिए क्योंकि उन में गलत मनोदशा थी, वो इस बात के साथ आए कि जब तक हमें ये दाम न मिल जाए हम दाख की बारी में नही आएगे, दुसरे लोग मालिक पर भरोसा कर रहे थे, इसलिए उसने उन्हें उदारता से दिया/

हम सटीकता से मुल्यांकन नही कर सकते हैं कि कोई व्यक्ति न्याय आसन के सामने किस तरह से होगा, जानते हैं प्रेरित पौलुस ने पहला कुरिन्थियों अध्याय 4 में कहा, मैं मेरे विरोध में कुछ नही रखता, अब तक तो मेरा विवेक शुद्ध है, मैं खुद का न्याय नही कर सकता, केवल प्रभू न्याय करनेवाला है/ याने कुछ मुद्दे हमें उस पर छोड़ देने चाहिए, हमारी जिम्मेदारी है कि जितना हो सके उतना उत्तम करें, उसने हमें जो दिया उसके साथ और अपने पुरे दिल से उससे प्रेम रखे/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब उस विश्वासी के बारे में क्या जो अपने दिल में परमेश्वर के लिए कुछ भला करना चाहता है, लेकिन उसे पुरा करने का मौका मिलने से पहले मर जाते हैं, उन विश्वासियों के बारे में क्या जो परमेश्वर के लिए महान काम करना चाहते हैं, लेकिन इसे नही कर पाते हैं, शायद मौका नही है, या परिस्थिति सही नही हैं, और अपनी इच्छाह पूरी करने के लिए उनके पास योग्यता नही हैं, उस विश्वासी के बारे में क्या जो प्रभू के लिए करोडों डॉलर देना चाहता है, लेकिन ऐसा करने के लिए कोई कमाई नही है, क्या ऐसे लोगों को दण्ड मिलेगा क्योंकि वो बहुत धन नही दे सके, कि वो अपने म हाँ लक्ष्यों क ओ पूरा नही कर पाए, इन सवालों के जवाब बहुत महत्वपूर्ण है/ सुनिए/

डॉक्टर अरविन लुथजर: जॉन मैं सोचता हूं कि ये बात बताना बहुत जरूरी है कि वचन में परमेश्वर हमारे दिल को देखता है, वो सबकुछ जानता है, तो मैं सोचता हूं कि कईबार वो हमे इस तरह से प्रतिफल देगा कि यदि हमारे पास मौका होता तो हमने किया किया होता/ कहिए कि कोई जवान 15 साल की उम्र में मर जाता है, वो प्रभू की सेवा करना चाहता था, वो प्रभू की सेवा कर रहा था, और परमेश्वर उसे लेखे में लेता है, अवश्य ही फिर से हम इसे नही देख सकते हैं, विश्वासयोग्यता के दाम के रूप में,ये तो सारी बातों से बढकर प्रतिफल है, जिसमे उद्देश्य शामिल हैं'/ पौलूस ये लिखता है, देने के बारे में, क्योंकि यदि मन की तयारी हो तो दान उसके अनुसार ग्रहण भी होता है, जो उसके पास है, न कि उसके अनुसार जो उसके पास नही/

इस वचन के अगल अर्थ हैं लेकिन मैं समझता हूं कि पौलुस कहता है कि यदि आप 100 डोलर देना चाहते हैं, या 1000 या यदि आप के पास होते तो और देना चाहते हैं, आप जो देना चाहते हैं, उसके लिए आपको सम्मान

मिलेगा, हम कंजूसी के लिए इसका उपयोग नही कर सकते हैं कि कहे, मैं कुछ नही दे रहा हूं, यदि मेरे पास होता तो मैं और देना पसंद करता, नही, नही, नही/ परमेश्वर इस ढोंग को देखता है, लेकिन सच्चाई तो ये कि अभी भी मेरे और आपके दिल में, हम चाहते हैं कि प्रभू के लिए ज्यादा करें लेकिन नही कर सकते, परमेश्वर इसे देखता है और उसके अनुसार प्रतिफल देगा/

*****

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब ये दिलचस्प सवाल है, क्या आप सोचते हैं कि स्वर्ग में कोई दण्ड होगा? मैंने ये सवाल क्यों पूछा, प्रेरित पौलुस ने कहा, कि हम सब मसीह के न्याय आसन के सामने खड़े होगे, और सब अपने शरीर में रहते हुए हमने जो काम किए उसका प्रतिफल पाएगे, चाहे भले हो या बुरे हो, हमें बुरा नही लगेगा कि शरीर में रहते हुए भले काम जो किए थे उसका प्रतिफल पाए, लेकिन बाइबल का क्या अर्थ है जब ये कहती है कि जो हमने बुरा किया उसका भी प्रतिफल पाएगे, क्या यीशु मसीह हम पर क्रोधित होकर हमें दण्ड देगा, आज्ञाभंग करनेवाले जीवन जीने के लिए, मैं चाहता हूं कि आप सुनिए/

डॉक्टर अरविन लुथजर: खैर जॉन मैं सोचता हूं कि सबसे पहले हमें दण्ड इस शब्द का अर्थ देखना होगा, यदि आपका कहना ये है कि दण्ड का मतलब यीशु मसीह क्रोधित होकर हमसे इन सारी चीजों को ले लेंगे, तो जवाब है नही, जब वो क्रूस पर मरा तो उसने हमारा दण्ड उठा लिया, लेकिन क्या आप नही सोचते कि यीशु की आँखों में देखते हुए दू:ख देखे, और न सुने कि हे भले और विश्वासयोग्य दास, मैं इसे एक दण्ड के रूप में देखूंगा, मैं सोचता हूं कि मुझे ये जानना होगा, कि मैंने कौनसी गलती की है, यीशु मसीह के लिए नही जीया, कुछ भी हो इसे याद रखिए कि हम न्याय आसन के बारे में कह रहे हैं, और इसलिए हम अपना समय बर्बाद नही कर सकते कि न्याय आसन से न्याय दूर कर दे, इसलिए मैंने ये किताब लिखी, मैंने इसके बारे म गहराई से महसूस किया, याने हम गंभीर बात के बरे में कह रहे हैं, आप और मैं जिस तरह जीवन जीए उसके लिए यीशु मसीह को लेखा देंगे/ वाह/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जब आप न्याय आसन के समय यीशु मसीह के सामने खड़े होंगे, और वो आपके जीवन का मुल्यांकन करता है, यदि आप उसकी आँखों में देखे, और दू:ख देखे, और आप शब्द न सुने, हे भले और विश्वासयोग्य दास तूने अच्छा किया है, तो आप उन सारे प्रतिफल को याद करेंगे जो आपने अनंतकाल के लिए

खो दिए हैं, और आपकी आँखों में आंसू आएगे, आपके आंसू कितने समय तक रहेंगे, आप कब तक उस दू:ख का अनुभव करेंगे, कितने समय तक आप खेद करेंगे की इस पृथ्वी पर रहते हुए आप यीशु मसीह के लिए नही जिए, डॉ. लुथजर इन सवालों के जवाब बाइबल से देते हैं, सुनिए/

डॉक्टर अरविन लुथजर: खैर, मैं सोचता हूं, की बाइबल ये कहने में बहुत स्पष्ट है जॉन, कि परमेश्वर हमारी आँखों से आंसू पोछ देगा, हम नही जानते की कितना समय होगा कि हमारे आँखों से आसूं पीछे जाएगे, कि हम स्वर्ग के पुरे आनंद में प्रवेश करें, लेकिन इतना जानते हैं, कि हमारा स्थान प्रभावी होगा, जिस तरह हम जीते हैं उसमे/

अब जैसे हमने पहले भी कहा है कि इसका ये अर्थ नही कि हम दो अलग तरह के लोगों के बारे में कह रहे हैं, इसका केवल यही अर्थ है जैसे पुराना उदाहरण कहता है, सब कप भरे होंगे, लेकिन कुछ दूसरों से ज्यादा भरे होंगे, मैं इस उदाहरण का उपयोग करना चाहता हूं की यदि आप झूमर को देखते तो उसमे बहुत से लाईट बलप होते हैं, कुछ बहुत तेज़ और बड़े होते हैं, तो कुछ छोटे होते हैं, ये सब कमरे में रोशनी लाने के लिए योगदान देते हैं, लेकिन सब एक ही तरह से काम नही कर रहे हैं, शायद स्वर्ग में इसी तरह से होगा,सब खुश होंगे, सब प्रभू की सेवा करेंगे, लेकिन कुछ लोगों की बड़ी जिम्मेदारी होंगी,क्योंकि उन्होंने यीशु मसीह और उसके वचन और आज्ञाकारिता को यहाँ पृथ्वी पर बहुत बहुत गंभीरता से लिया/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: कुछ लोग ये सोच रहे होगे, खैर जॉन यदि हम दू:ख का अनुभव करेंगे, खेद करेंगे और मसीह के न्याय आसन के सामने आंसूं बहाएगे, क्या ये परगेटरी के विचारधारा जैसे सुनाई नही देता? तो जवाब है, बिलकुल नही, दो. लुथजर बताते हैं कि क्यों?

डॉक्टर अरविन लुथजर: मैं सोचता हूं कि हमें ये समझना बहुत जरूरी है, जब हम प्रतिफल खोने के बैर में कहते हैं, तो हम परगेटरी के बारे में नही कह रहे हैं, स्वर्ग में प्रवेश करने से पहले, देखिए परगेटरी तो ऐसी बात है जो इस विचार से लाइ गई, की मध्य युग में विश्वास किया जाता था कि कोई भी स्वर्ग में जाने लायक सिद्ध दशा में नही मरता है/ और इ स तरह से वो सही भी थे, परगेटरी इस मकसद से थी, कि लोगों को शुद्ध करें याने किसी दिन आगे जाकर उनके सारे पाप और असफलता जल जाएगे, और फिर वो स्वर्ग में जाने के योग्य होंगे/

फिर मार्टिन लूथर ने ये जाना कि विश्वास द्वारा धर्मी ठहरा जाता है, और यदि हम मसीह में विश्वास करते हैं तो हम अभी परमेश्वर जितने ही सिद्ध हैं, तो उन्होंने जाना कि परगेटरी की जरूरत नही है, प्रभू के धन्यवाद कि हम पृथ्वी से तुरन्त स्वर्ग में जाते हैं, मसीह हमें लेकर पिता के सामने परिपूर्ण रूप में पहुंचाता है, याने ये परगेटरी नही है, हम इस बारे में कह रहे हैं /

हम इस बारे में कह रहे हैं, कि मसीह की आज्ञाभंग करने के परिणाम क्या होंगे, और मसीह हमसे वैसे ही व्यवहार करता है जैसे मैं अपने बच्चों से करता हूं, जानते हैं जब बच्चे विश्वासयोग्य होते हैं तो मैं ज्यादा जिम्मेदारी देता हूं, तुम पैसों की देखभाल करों, सही खर्च करना, तो मैं अगली बारे तुम्हें और ज्यादा दूंगा, यदि नही करोगे तो अनुशासन है, प्रतिफल खो देंगे, माता पिता के रूप में हमने इसे किया है, और यही परमेश्वर हमारे लिए करता है/

जब हम उस शुरवाती समय से पार हो जाएगें, और हम अनंतकाल में शुरू करेंगे तो सब खुश होंगे, लेकिन मैं सोचता हूं कि राज्य में फर्क होगा, शायद सदा के लिए, क्योंकि आज हम जिस तरह से जीते हैं ये मानो कॉलेज की एंट्रेंस एग्जाम जैसे है, परमेश्वर ये देख रहा है कि हम अनंतकाल के राज्य में कहाँ पर होंगे, इसलिए आज आपका जीवन बहुत बहुत महत्वपूर्ण है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब यदि आप विश्वासी हैं, और आप चर्चा सुन रहे हैं कि हमें स्वर्ग में यीशु मसीह के द्वारा कौनसा प्रतिफल मिलेगा, शायद आप सोचे कि मैं इच्छा रखता हूं, मैं जितने हो सके उतने प्रतिफल पाना चाहता हूं, कि मुझे मसीह के राज्य में महान माना जाए? क्या ये जिज्ञासा रखना ठीक है? क्या ये ठीक है कि कोशिश करके मेरे लिए प्रतिफल पाने की कोशिश करुँ? इसके बजाए कि मसीह से प्रेम करता हूं इसलिए ये सब करता हूं, आप कैसे संतुलन रखेंगे या नियन्त्रण में रखेंगे, कि खुद के लिए प्रतिफल पाने की आपकी इच्छा इसके विपरीत कि अपने स्वामी से प्रेम करते हैं, इसलिए सब कुछ करते हैं, डॉ लुथजर बताते हैं/

डॉक्टर अरविन लुथजर: खैर मैं सोचता हूं जॉन यदि आप बड़ा वाक्य कहे, कि क्या ये ठीक है की मैं प्रतिफल के पीछे जाऊं कि प्रभू राज्य में मुझे बड़ा प्रतिफल मिले, मैं सोचता हूं कि ये गलत विचार है, लेकिन यदि इसे जोड़े यीशु को खुश करने से, ये जानते हुए कि पौलुस भी यही करता है, वो कहता है कि मैं मसीह को प्रसन्न करना चाहता हूं क्योंकि हम सब मसीह के न्याय आसन के सामने खड़े होंगे/

अब हम सच में समझने लगते हैं कि हमारी प्रेरणा अगल स्थर पर है, ये ऐसा नही कि मैं स्वर्ग में बड़ा होना चाहता हूं, सच में, यीशु कहेगा कि इसका उल्टा सही है, यदि हमें स्वर्ग में बड़ी जगह चाहिए तो पृथ्वी पर नम्र होना होगा/ याने ये मुद्दा नही है/

मुद्दा ये है, क्या मैं उसे निराश करना चाहता हूं जिससे प्यार करता हूं, और इस व्यक्ति मैं निराश कर रहा हूं जो ये कहता कि यदि तू मुझ से विश्वासयोग्य रहो, मैं तुम्हें इस तरह से आशीष दूंगा कि तुम कल्पना भी न ही कर सकते, मैं तुम्हें एक मात्रा में प्रतिफल दूंगा, इतना दूंगा, सवाल है कि क्या आप उसकी सेवा करने की इच्छा रखते हैं, इच्छा हो, हाँ, लेकिन पौलुस कहता है, वचन के इस भाग से, मेरी इच्छा है कि उसे प्रसन्न करूं, याने हमारे जीवन की हर बात इसके आस पास होनी चाहिए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: शायद आप में से कुछ दर्शक ये कह रहे होंगे, इससे मेरे जीवन में क्या फर्क आएगा यदि मैं इस तरह से सोचकर जीता हूं कि मसीह के लिए मैं पृथ्वी पर जैसे जीता हूं वो मेरे जीवन पर प्रभाव डालता है, जवाब है कि मुझे लगता है कि ये बड़ा फर्क लाता है, ये आपके जीवन में पूरी तरह से अलग दृष्टिकोण देता है, डॉ. लुथजर बताते हैं/

डॉक्टर अरविन लुथजर: जॉन जब आप प्रतिफल से आनेवाले फर्क को देखते हैं, जानते हैं, लोग कहते हैं कि ये क्या फर्क लाता है, यदि मैं लक्ष्य पर अपनी आँखें रखूं, यदि मैं अनंतकाल की सोच कर जीउ, जी बड़ा फर्क है, क्योंकि ये आपकी मदत करेगा कि जीवन की अधूरी बातों को स्वीकार करें, ये आपको अलग दृष्टिकोण देगा/

मैं आपको उन मिशनरी की कहानी बताना चाहता हूं, जो नाव पर यूरोप से न्यूयॉर्क आ रहे थे, और उस समय के प्रेसिडेंट रोज़ावेल्ट भी उसी नाव पर थे, और जब प्रेसिडेंट आए तो उनके स्वागत के लिए बड़ा डेलिगेशन किया गया, और इन मिशनरी को बहुत बुरा लगा और वो ये सोचने लगे, हम जानते हैं कि ये कुछ है, वहां ये प्रेसिडेंट थे और उनके आस पास के लोग और उनके कुछ सलाहकार जो शैतान की सेवा करते थे, और जहाज पर इस तरह शराब पिते हैं, जब वो न्यूयॉर्क में आए तो उनका बड़ा स्वागत हुआ, हम यहाँ तेरी सेवा करते हैं राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभू, जब हम न्यूयॉर्क पहुंचे, तो हमारे स्वागत के लिए कोई नही है, मिशनरी के दिल में दू:ख था, लेकिन एक दिन परमेश्वर ने वो सारा दू:ख दूर कर दिया, उसने अपनी पत्नी को इस तरह बताया, कहा, मैंने प्रभू को एक और बार बताया कि ये कितना अन्याय है, मैंने कहा जब वो घर आते हैं तो अपना

प्रतिफल पाते हैं, वहां उनके लिए कोई होता है और जब हम घर में आते हैं, तो कोई नही, उन्होंने कहा कि मानो परमेश्वर ने कहा, रुको एक मिनट, तुम अब तक घर नही आए/

ओ मेरे दोस्तों, आज, मैं आप से कह रहा हूं जो दू:ख में हैं, और परेशानी से जा रहे हैं, गलत व्यवहार होता है, और जीवन में मुश्किलें हैं, आपने कुछ किया और दूसरों ने सम्मान पाया, लोगों ने आपको मारा और आप जख्मी हैं, मानो सड़क के किनारे पड़े हैं, लेकिन यीशु से प्यार करें, और उसकी सेवा करना चाहते हैं, तो मैं चाहता हूं कि जान ले, आप अब तक घर नही आए, और वो जातना है और समझता है और आपको प्रतिफल देगा/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्र् द्यदृ ठ्ठड़ड़ड्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मद्वद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ ख्ऋद्मण्दृध्र्.दृद्धढ़

@JAshow.org

क्दृद्रन्द्धत्ढ़ण्द्य 2016 ऋच्ड्ढक्ष्